सुंदर हूरों का संसार

मरने से पहले एक बार जरूर जान लें, और कोइ नहीं बताएगा

ज़ैड खान

गुड मॉर्निंग नमस्कार ससरियाकाल अस्सालामु अलइकुम

बहुत से लोग समझते हैं कि इसलाम एक रूखा धर्म है जिस मैं मनोरंजन और आनंद का कोई स्थान नहीं है अगर हम इसलाम पर चलेंगे तो हमारा जीवन भी बोर और बे मज़ा होजाएगा जिस में कोई आनंद और मनोरजंन नहीं होगा। यह बहुत बढ़ी ग़लतफ़हमी है। कया हमारा बनाने वाला यह नहीं जनता कि मेरे बनदों को कया अच्छा लगता है उनहें किस चीज़ में मज़ा आता है तो वह कयों नहीं चाहेगा कि मेरे बनदे मज़े करें उनका मनोरंजन हो। अल्लाह पूरे संसार का बनाने वाला है और दुनया में सारी मनोरंजन की चीज़ें उसी ने बनाई हैं। बलकि इंसान पैदा होने से पहले जानता भी नहीं है कि इस दुनया में आने के बाद उसे किन चीज़ों मैं मज़ा आएगा लेकिन मालिक को मालूम था कि मेरे बनदों को किस चीज़ों मे मजा आयगा इसलिए उसने इंसान के पैदा होने से पहले ही उसके मनोरंजन के सामान बना दिए जैसे औरत मरद का रिशता, स्वादिष्ट खाने, सुनदर बाग़, जंगल और जानवर कया यह किसी इनसान ने बनाए हैं। लेकिन यहां पर जो मनोरंजन की चिज़ें बनाई हैं वह तो जन्नत के मनोरंजन की झलक दिखाने के लिए बनाई गई हैं असली मनोरंजन की चिज़ें तो जन्नत में हैं जो नेक लोगों को मिलेंगी। यहां पर मनोरंजन की चिज़ें बनाने का दूसरा मक़सद हमारा इम्तिहान लेना है कि हम इन चीज़ों में लग कर अल्लाह को भूल तो नहीं जाते हैं और अपने मनोरंजन के लिए दूसरों का नुकसान तो नहीं करते हैं जैसे बहुत से पापी लोग अपने मनोरंजन के लिए मसूम बच्चियों की ज़िनदगी बरबाद कर देते हैं। याद रहे कि इस दुनया का इम्तिहान यह है कि मालिक छुप कर हमें देख रहा है कि हम अपने बनाने वाले अल्लाह की पूजा करते हैं या किसी और के आगे माथा टेकते हैं और अपनी इक्षा से अच्छे कर्म करते हैं या बुरे।

लेकिन फ़रक़ यह है कि हम इसी जीवन में सारे मज़े करना चहते हैं और मालिक चाहता है कि हम मरने के बाद के जीवन में हमेशा हमेशा मज़े करें कयोंकि इस जीवन में हमें इम्तिहान के लिए भेजा गया है और इम्तिहान में मज़े नहीं किए जा सकते यहां तो केवल हमारी ज़रूरतें ही पूरी हो सकती हैं। इसकी मिसाल ऐसी है कि मां बाप बच्चे को सुबह स्कूल भेजने के लिए जगाते हैं लेकिन बच्चे को सोने में बहुत आनंद आता है और उठना बहुत बुरा लगता है और उसे लगता है कि मां बाप मेरे आनंद और मनोरंजन में रुकावट पैदा कर रहे हैं लेकिन वासतव में एसा नहीं होता बलकि मां बाप भी बच्चे के आनंद के लिए ही उसे उठा रहे होते हैं कि अगर यह इसी तरह सोता रहेगा और स्कूल नहीं जाएगा तो यह अनपढ़ रह जाएगा और एक दिन पसताएगा और पूरी जिंदगी ठोकरें खाएगा। और अगर यह उठ कर स्कूल जाएगा तो इसे अभी थोढ़ी परेशानी तो होगी लेकिन पढ़ लिख कर यह बढ़ा आदमी बन जाएगा और पूरी जिंदगी आनंद उठाएगा। दरासल मां बाप बच्चे को नींद से उठा कर उसके लिए एक बढ़े आनंद कि तय्यारी कर रहे होते हैं जिसको बच्चा नहीं समझ पाता। इसी तरह अल्लाह हमारे बढ़े आनंद की तय्यारी कर रहा है जिसको अभी हम सोच भी नहीं सकते। लेकिन वह आनंद पाने के लिए हमें इस जीवन में मालिक का आज्ञाकारी बनना पड़ेगा और वह आनंद हमें इस दुनया में नहीं मिल सकता कयोंकि यह तो इम्तिहान की जगह है। जब हम इस परीक्षा में पास हो जाएंगे तब मरने के बाद उस आनंद का हम मज़ा ले पाएंगे। यह पापी लोग अपने मनोरंजन के लिए कया कया करते हैं शराब पीते हैं, अपने मनोरंजन के लिए मसूम बच्चियों की ज़िनदगी बरबाद कर देते हैं। तो जो इंसान अल्लाह का आज्ञाकारी बन कर जीवन बिता रहा है और अल्लाह को राज़ी करने के लिए अपनी काम-वासना को दबा रहा हे तो कया मालिक उसका मनोरंजन नहीं कराएगा। कया मालिक एसा अन्याय कर सकता है कि पापियों का तो मनेरंजन कराए और अपने नेक बनदों का मनेरंजन न कराए। नहीं बलकि अल्लाह इस जीवन के बाद अपने नेक बनदों का एसा जबरदसत मनोरंजन कराएगा कि यह पापी लोग सोच भी नहीं सकते, और पापी लोगों को नर्क में दण्ड दीया जाएगा।

जन्नत उसी जगह का नाम है जहा पर मालिक आपने नेक बनदों को रखेगा और उनहें हमेशा हमेशा के लिए आनंद से भरपूर जीवन देगा। और नर्क वह जैल है जहां पर आग है और सांप बिच्छू हैं जहा पर पापी लोगों को यातनाएं दी जाएंगी और वहां पर हतौड़ों से उनकी पिटाई होगी। जन्नत के बारे में अल्लाह कहता है की उसमें नेक लोगों के सुख और मनोरंजन के लिए अल्लाह ने ऐसी ऐसी सुंदर और शानदार नेमतें बनाई हैं जिनहें कोई बड़े से बड़ा वैज्ञानिक या

बुद्धिजीवी सोच भी नहीं सकता। मालिक क़ुरान में जन्नत के बारे में कहता है कि ´कोई नहीं जानता कि अल्लाह ने जन्नतियों की आखों की ठंडक का कया कया सामान जन्नत में रखा है´। जन्नत की इन शानदार नेमतों को दो भागों में बाटा जा सकता है। एक तो वह नेमतें हैं जो इनसान की अक़ल में आसकती हैं जैसे सुंदर हूरें, सुंदर बाग़, नहरें, महल, स्वादिष्ट खाने पीने की चीज़ें, परों वाले घोड़े, वगैरा। और दूसरी नेमतें वह हैं कि उन जैसी चिज़ें इस दुनया में हैं ही नहीं इस लिए वह अभी हमारी अक़ल में नहीं आसकतीं। वैसे तो जन्नत की नेमतों के बारे में क़ुरान और हदीस में बहुत कुछ बताया गया है जो सब इस छोटी सी किताब में नहीं बताया जा सकता लेकिन यहां पर हूरों के बारे में थोढ़ा बताया जा रहा है और फिर यह बताया जायगा की इन हूरों को प्राप्त करने का और उनसे शादी करने का कया तरीक़ा है, और किन लोगों को यह हूरें मिलेंगी। याद रहे कि यह कोई काल्पनिक कथा, देवमाला या उपन्यास नहीं है बलकि अटल सच्चाई है जो हमारे बनाने वाले अल्लाह ने अपने आख़री संदेश क़ुरान में बताई है और उसके आख़री संदेशटा हज़रत मुहम्मद ने भी बताई है। यह किताब मनोरंजन के लिए नहीं लीखी गई बलकि इस लीए ताकि हम जन्नत के मनोरंजन की एक झलक देख सकें और उसको प्राप्त करने की कोशिश करें और अल्लाह का आज्ञाकारी बन कर जीवन गुज़ारें ताकि अनन्त जीवन का सुख भोग सकें। अल्लाह से प्रार्थना है की अल्लाह हम सब को जन्नत में जाने वाला बनाए।

सुंदर हूर

हज़रत इबने अब्बास फ़रमाते हैं कि अल्लाह का दोस्त (वह मुसलमान जो पूरा जीवन अल्लाह का आज्ञाकारी बन कर बिताता है) एक तख़्त पर बैठा होग। उस तख़्त की ऊंनचाई पांच सौ साल की यात्रा के बराबर होगी। यह तख़्त नीलम और लाल रंग के पत्थर का होगा। उसके दो पर पन्ना और एमराल्ड के होंगे। उस पर सत्तर बिछोने होंगे उन सब का ढांचा बारीक रेशम और नूर का होगा। उस तख़्त पर एह दुल्हन का कमरा होगा जो सच्चे मोती का होगा उस पर नूर के सत्तर परदे होंगे जिनके बारे में अल्लाह कहता है "जन्नती लोग अपनी बीवयों के साथ दुल्हन के कमरों में टेक लगाए बैठे होंगे"। यह जन्नती इस तरह अपनी बीवी से लिपट रहा होगा कि न उस का बीवी से दिल भर रहा होगा न बीवी का उस से दिल भर रहा होगा, यह लपटने का समय चालीस साल तक चलेगा। अचानक वह अपना सर उठायगा तो देखेगा कि एक और बीवी उसको झांक रही होगी और वह पुकार कर कहेगी कि ऐ अल्लाह के दोस्त कया हमारा आप पर कोई हक़ नहीं यानी हमें नहीं पूछेंगे। जन्नती कहेगा ऐ मेरी महबूबा तुम कौन हो? वह कहेगी मैं तुमहारी उन बीवयों में से हूं जिनके बारे में अल्लाह ने क़ुरान में कहा है و لدینا مزید अर्थातः और हम उनके अलावा भी देंगे (यानी तुमहारे नेक कर्मों पर जो देंगे उसके अलावा हम अपनी तरफ़ से भी देंगे)। तो फिर उसका दो परों वाला तख़्त उड़ कर उस बीवी के पास पहुंच जायगा। जन्नती उस बीवी को देखेगा तो वह पहली वाली से एक लाख गुणा ज़यादा सुंदर होगी। वह उस से भी चालीस साल तक लिपटेगा। न वह उस से उकतायगा न वह उस से उकतायगी। इसके बाद उसके महल में एक रोशनी का लशकारा मारेगा यानी पूरा महल जगमगा उठेगा। तो वह आश्चर्यचकित रह जायगा और कहेगा, सुबहानअल्लाह कया किसी शान वाले फ़रिशते ने झांक कर देखा है या हमारे रब ने अपने दर्शन कराए हैं। महल का दरबान फ़रिशता जोकि उस से सत्तर साल की यात्रा के बराबर दूर होगा (यानी उसका महल सत्तर साल की यात्रा के बराबर लम्बा होगा) कहेगा कि न तो किसी फ़रिशते ने तुमहें झांक कर देखा है न ही रब ने अपने दर्शन कराए हैं। वह पूछेगा कि फिर यह किस का नूर था। फ़रिशता जवाब देगा कि तुमहारी नेक बीवी का, वह भी जन्नत में तुमहारे साथ है उसी ने आपकी तरफ़ झांक कर देखा है और आपके बग़लगीर होने पर मुसकुराई है यह नूर जो आपने देखा है उसके अगले दांतों की चमक थी। जब जन्नती अपना सर उठा कर देखेगा तो वह कहेगी ऐ अल्लाह के दोस्त हमारी तरफ़ नहीं देखेंगे। मैं तुमहारी दुनया की बीवी हूं लेकिन मालिक ने मुझे बहुत सुदंर बना दिया इसलिए आपको मुझे पहचानने में देर लगरही है। और उन में से हूं जिनके बारे में अल्लाह ने क़ुरान में कहा है فلا تعلم نفس ما اخفی لهم من قرة اعین अर्थातः कि कोई नहीं जानता कि अल्लाह ने जन्नतियों की आखों की ठंडक का कया कया सामान जन्नत में रखा है। और कहेगी कि रब ने हम दोनों को जन्नत इस

लीए दी है क्योंकि हम ने दुनया में केवल एक अल्लाह को माना और नमाज़ पढ़ी और मूर्ति पूजा नहीं की और अच्छे कर्म किए। इसके बाद जन्नती का तख़्त उड़ कर उस बीवी के पास पहुंच जायगा। यह बीवी पिछली वाली से एल लाख गुणा ज़यादा सुंदर होगी क्योंकि उस ने दुनया में नमाज़ें भी पढ़ी थीं और रोज़े भी रखे थे क़ुरान भी पढ़ा था और अच्छे कर्म भी कीए थे। यह जन्नत में दाख़िल होगी तो जन्नत की तमाम औरतों से ज़यादा सुंदर और सब की मालकिन होगी। वह जन्नती उस से चालीस साल तक बग़लगीर होगा। न वह उस से थकेगा न वह उस से थकेगी। जब वह जन्नती के सामने खड़ी होगी तो उस ने याक़ूँत के पायल पहन रखे होंगे। जब उन पायलों को क़रीब से सुना जायगा तो उन में से जन्नत के हर पक्षी की मीठी आवाज़ सुनाई देगी। जब वह उसकी हतेली को छुएगा तो वह हड्डी के गूदे से जयादा नरम होगी और उसकी हतेली से जन्नत की सुगंध आ रही होगी। उस पर नूर के सत्तर जोड़े होंगे अगर उन में से एक की ओढ़नी को भी वह दुनया में फैलादे तो पूरी दुनया चमक जाए। हर जोड़ा मकड़ी के जाल से ज़यादा बारीक होगा और कागज़ से ज़यादा हलका होगा। वह पोशाकें इतनी बारीक होंगी और उसका शरीर इतना चमकदार हौगा कि कपड़ों के उपर से उसकी हड्डी के अंदर का गूदा भी साफ़ नज़र आता होगा। कभी वह सोने के पायल पहनेगी कभी चांदी के कभी सच्चे मोती के। उसकी दांई आसतीन पर लिखा होगा الحمد لاالله الزى صدقنا وعده अर्थातः सब तारीफ़ें अल्लाह के लीए हैं जिसने अपना वचन पूरा किया। और बांई आसतीन पर लिखा होगा الحمد لاالله الزى اذهب عن الحزن अर्थातः सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से दुख दूर कर दिया। और उसके सीने पर लिखा होगा حبيبى انا لک لا ارید بک بدلا अर्थातः मेरे महबूब मैं आपकी हूं मैं आपकी जगह किसी और को नहीं चाहती। उस औरत का सीना मर्द का आइना होगा यानी वह अपनी शकल उसमें देखेगा। यह औरत याक़ूत की तरह साफ़ चमकती होगी, सुदंरता में मरजान होगी, उसकी सफैंदी अंडे जैसी होगी, अपने पति की आशिक़ होगी, पच्चीस साल की उमर की होगी। मुसकुराएगी तो उसके अगले दांतों की चमक से पूरी जन्नत जगमगा उठेगी। अगर लोग उसकी आवाज़ सुन लें तो सब अच्छे बुरे उस पर दीवाने हो जाएं। जब वह जन्नती के सामने खड़ी होगी तो उसकी पिंडली का नूर और हुस्न उसके क़दमों से एक लाख गुणा ज़यादा होगा। और उसकी रानों का नूर और हुस्न उसकी पींडली से एक लाख गुणा ज़यादा होगा। और उसके सुरीन का नूर और हुस्न उसकी रानों से एक लाख गुणा ज़यादा होगा। और उसके पेट का नूर और हुस्न उसके सुरीन से एक लाख गुणा ज़यादा होगा। और उसके सीने का नूर और हुस्न उसके पेट से एक लाख गुणा ज़यादा होगा। और उसके चेहरा का नूर और हुस्न उसके सीने से एक लाख गुणा ज़यादा होगा। अगर वह दुनया के समुद्र में अपना लोआब डाल दे तो सब पानी मीठा हो जाए। अगर वह दुनया में झांक ले तो उसके नूर व हुस्न से सारी दुनया जगमगा जाए। उसके सर पर याक़ूत और अहमर का ताज होगा जिस पर सच्चे मोती और मरजान जड़े होंगे। उसके दाएं तरफ़ उसके बालों की एक लाख ज़ुलफ़ें होंगी, उन ज़ुलफ़ों में से कुछ तो नूर की होंगी, कुछ याक़ूत की होंगी, कुछ ज़बरजद कुछ मरजान और कुछ जवाहर की होंगी। हर ज़ुलफ़ में रगां रंग के मोती डले होंगे जिन से हर तरह की सुगंध निकलती होगी, और हर ज़ुलफ़ को ज़मर्रुद, अख़ज़र या अहमर के ताज पहनाए गए होंगे। जन्नत की हर ख़ुशबू उसके बालों के नीचे होगी। उसकी ज़ुलफ़ों के हर मोती की चमक चालीस साल सफ़र करने की बराबर की दूरी से दिखाई देगी। उसके बाएं और पीछे भी इसी तरह एक एक लाख ज़ुलफ़ें होंगी। यह सारी ज़ुलफ़ें उसके सीने पर पड़ते हुए ज़मीन पर लटकती होंगी और वह उनहें कसतूरी के फ़रश पर घसीटते हुए चलेगी। उसके दाएं तरफ़ एक लाख नौकरानियां होंगी हर नौकरानी एह ज़ुलफ़ उठा कर चलेगी उसके बाएं और पीछे भी इसी तरह एक एक लाख नौकरानिया होगीं जो उसकी लटें उठा कर चलेंगी। उसके आगे एक लाख नौकरानियां चलती होंगी जिनके हाथों में सच्चे मोतियों की अंगीठियां होंगी जिन में आग के बग़ैर बख़ूर जलते होंगे और उनकी ख़ुशबू जन्नत 100 साल सफ़र करने की बराबर की दूरी तक फ़ैली होगी। यह बीवी अल्लाह के दोस्त के सामने खढ़े होकर उसकी हैरत और ख़ुशी का मज़ा ले रही होगी और उस पर फ़िदा हो रही होगी। फिर वह औरत अपने

पति को एक लाख तरह की चालें चल कर दिखाएगी। उसकी हर चाल में सत्तर पोशाकें ख़ुद ब ख़ुद बदलती होंगी। उसके बालों को संवारने (कंघी करने वाली) वाली उसके साथ चल रही होगी। जब वह चलेगी तो नाज़ व नख़रों से चलेगी, बल खाकर चलेगी, शर्म को दरमयान से उठा कर चलेगी, रक़्स करते हुए चलेगी, ख़ुश होकर मसती दिखाएगी और मुसकुराएगी। जब वह घूमेगी तो उसके बाल उठाने वाली कनीजें भी घुम जाएंगी। जब वह एक लाख चालें दिखाने के बाद बैठेगी तो उसकी ज़ुलफ़ें लटक रही होंगी। इस लाजवाब हुस्न को देख कर अल्लाह का दोस्त मदहोश हो जाएगा। अगर अल्लाह ने उसे सहन करने की शक्ति न दी होती तो वह उसकी तरफ़ देख भी नहीं सकता था। अगर वहां मौत आसकती तो वह खुशी से मर जाता लेकिन जन्नत में किसी को मौत नहीं आसकती। उस से कहा जाएगा कि यह सब नेमतें तुमहें इस लिए दी गई हैं कयोंकि तुम दुनया में जाकर अल्लाह को भूले नहीं तुम ने एक अल्लाह कि पूजा की और मुर्ति पूजा नहीं की और नमाज़ पढ़ते रहे और अच्छे कर्म करते रहे और बुरे कर्मों से बचते रहे।[1]

टापू वाला अदमी

शेख़ अबदुल वाहिद बिन ज़ैद कहते हैं की एक बार हम पानी के जहाज़ पर यात्रा कर रहे थे कि तूफ़ान आगया और जहाजं हमारे क़ाबू से बाहर हो कर तूफ़ान की दिशा में बहने लगा और एक टापू से जा लगा। वहां पर हम उतरे तो देखा एक आदमी वहां रहता था और एक देवता की पूजा करता था जिसकी उसने एक मुर्ति भी बना रखी थी। हमारी उस आदमी से जब बात हुई तो उस से पूछा कि तुम किस की पूजा करते हो। उस ने उस मूर्ति की तरफ़ इशारा किया कि इसकी। हम ने कहा कि तेरी मूर्ति रचना कार नहीं बलकि खुद वह किसी की रचना है और हम उस अल्लाह की पूजा करते हैं जिस ने पूरा संसार बनाया है। उस ने कहा तुमहें अल्लाह के बारे में किस तरह मालूम हुआ। हम ने कहा उस ने हमारी तरफ़ अपना एक संदेशटा भेजा जिसका नाम मुहम्मद था उसने हमें उस मालिक के बारे में बताया और यह भी कि हमें उसकी पूजा किस तरह करनी है। उसने पूछा वह संदेशटा कहां है तो हम ने कहा कि जब उस संदेशटा ने अल्लाह का पूरा संदेश हम तक पहुंचा दिया तो आल्लाह ने उसे अपने पास बुला लिया। उस ने कहा कि उस संदेशटा ने अपनी कोई निशानी तुमहारे पास छोढ़ी है। हम ने कहां हां उसने अल्लाह की आख़री किताब क़ुरान छोढ़ा है। उस ने कहा वह किताब मुझे दिखाओ। हम ने उसे क़ुरान दिखाया। उस ने कहा मैं तो पढ़ना नहीं जानता तुम कुछ पढ़ कर सुनाओ। हम ने पढ़ कर सुनाया वह सुन कर रोता रहा और कहने लगा जिस अल्लाह का यह क़ुरान है उसको तो दिल व जान से मानना चाहिए और उसको नाराज़ नहीं करना चाहिए। फिर वह अल्लाह पर इमान ले आया। हम ने उसको क़ुरान की कुछ सूरतें सिखाईं। जब रात हुई और हम सब सोने के लिए लेट गए तो वह कहने लगा भाईयों जिस अल्लाह का परिचय तुम ने मुझ से कराया कया वह भी सोता है। हम ने कहा नहीं उसको तो किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं न वह खाता है न सोता है। वह कहने लगा तुम कैसे बुरे बन्दे हो कि मालिक तो जागता है और तुम सोते हो। हमें उसकी बात से बहुत हैरत हुई। हम कुछ दिन उस टापू पर रहने के बाद अपने देश वापस आगए वह भी हमारे साथ आगया। हम ने उसकी मदद के लिए चंदा जमा किया और उसे वह पैसे दिए कि अपने काम मे लाए। वह कहने लगा अफ़सोस तुम ने ही मुझे रासता दिखाया और ख़ुद भटक गए। मुझे हैरत है कि जब मैं टापू पर रहता था और अल्लाह को छोढ़ कर एक मुर्ति (देवता) की पूजा किया करता था और अपने अल्लाह को पहचानता नहीं था उस वक़त भी मेरा अल्लाह मुझे खिलाता पिलाता था। अब जब मैं उसे पहचानने लगा हूं और उसका सच्चा बनदा बन गया हुं और मूर्तिपूजा छोढ़ कर उसी अल्लाह की पूजा करता हूं तो कया वह मुझे भूका मार देगा। तीन दिन बाद मुझे किसी ने खबर दी कि वह आदमी मर रहा है। मैं उसके पास पहुंचा और उस से पूछा की कया तमहें किसी चीजं की ज़रुरत है उसने कहा जिस अल्लाह ने तुमहें टापू पर भेज कर मुझे सच्चा मार्ग दिखाया उसी अल्लाह ने मेरी सारी ज़रूरतें पूरी कर दीं। फिर उसकी मृत्यु हो गई। बाद में मैं ने सपने में देखा कि एक बहुत सुंदर बाग़ में एक मसहरी बिछी है उस पर एक बहुत सुंदर लढ़की बैठी है जो कह रही है

उस टापू वाले आदमी को जलदी भेजो मैं उसकी याद मैं बेचैन हो रही हूं। उसके बाद दूसरे सपने मे मैं ने वही बाग़ और लढ़की देखी लेकिन उसके साथ वह टापू वाला अदमी भी बैठा है और दोनों बहुत प्रसन्न हैं और वह क़ुरान की यह आयत पढ़ रहा है "और फरिश्ते जन्नत के हर दरवाजे से उनके पास आएगें और सलाम करेंगे और कहेंगे कि
दुनिया में तुमने सब्र (धैर्य) किया (ये उसी का सिला है देखो) तो आख़िरत का घर कैसा अच्छा है" (Quran 13:23-24)।[2] (रोज़ुर रयाहीन)

हूरें प्राप्त करने का तरिक़ा

इन हूरों को प्राप्त करने का तरिक़ा जानने के लिए सब से पहले हमें अपने जीवन का उद्देश्य समझना होगा। अगर आप किसी बड़े से बड़े वैज्ञानिक या बुद्धिजीवी से सवाल करें के मरने के बाद कया होगा तो वह कोई सटीक जवाब नहीं दे पायगा बलकि वह आपके सवाल को ही बेकार सवाल बताकर टालने की कोशिश करेगा। तो मेरे प्यारे भाई आज हम उसी सवाल पर बात करेंगे जो हर इनसान के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और ज़रूरी सवाल है। वह यह है कि हमें मालिक ने क्यों बनाया और वह हम से क्या चाहता है और मरने के बाद हमारे साथ क्या होगा। इस सवाल का जवाब मालिक ही सब से अच्छा दे सकता है क्योंकि किसी चीज़ का बनाने वाला ही सही बता सकता है कि उसने वह चीज़ क्यों बनाई। जैसे कोई इंजीनियर कार बनाता है तो वह इंजीनियर ही सब से सही बता सकता है कि वह कार उस नें क्यों बनाई। इसी लिए क़ुरान जो कि मालिक की आखरी किताब है मालिक ने उस में इस सवाल का सटीक जवाब दिया है।

पैदा होने से पहले हम कहां थे

सब से पहला सवाल यह है कि पैदा होने से पहले हम कहां थे। तो क़ुरान यह बताता है कि अल्लाह ने सब इनसानों की आत्माओं को यानी पहले इनसान से लेकर आख़री इनसान तक की आत्मा को एक साथ बनाया था। और उन्हें एक अलग दुनिया में रखा था जिस्को 'आलमे अरवाह' (आत्माओं की दुनिया) कहा जाता है। वहाँ पर मालिक ने सभी इनसानों से एक सवाल किया था कि 'क्या मैं तुमहारा रब नहीं हूं'। तो सारे इनसानों ने एक ज़बान होकर जवाब दिया कि 'बे शक' (आप ही हमारे रब हैं)।

इसी को क़ुरान कहता है "और जब तुम्हारे रब ने आदम की औलाद की पीठों से (कमर से) उनकी औलाद निकाली तो उनसे खुद उनके मुकाबले में इक़रार करा लिया (पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ तो सब के सब बोले हाँ हम इसके गवाह हैं (कि आप ही हमारे रब हैं)। आगे मालिक कहता है, यह हमने इसलिए किया कि ऐसा न हो कि कहीं तुम क़यामत के दिन बोल उठो कि हम तो उससे बिल्कुल बे ख़बर थे" (यानि हमें मालूम ही नहीं था कि हमारा रब कौन है) (7:172)

लेकिन तब यह कहना बहुत आसान था क्योंकि सारी आत्माएँ अपने मालिक और उसकी शक्ति को देख रही थीं। लेकिन उन में सभी तरह की आत्माएँ थीं अच्छी भी ओर बुरी भी। कोई औरत कोई मर्द, कोई बहुत बड़ा वैज्ञानिक जैसे कि अल्बर्ट आइंस्टीन या इसाक न्यूटन वगैरा। कुछ लोग इन मैं से बहुत अच्छे भी थे जैसे कि संत या महात्मा और कुछ बहुत क्रूर (ज़ालिम) भी थे जैसे कि हिटलर या चंगेज़ ख़ान वग़ैरा। चूंकि मालिक ने सभी को बनाया था इस लिए वह सब के चरित्र के बारे में जानता था कि कौन कैसा है। हालांकि वे सभी लोग मालिक के सामने अच्छे बने रहते थे, और उसके पीछे भी कोई पाप नहीं करते थे। क्योंकि वे मालिक को देख रहे थे और उसकी शक्ति को जानते थे, कि हम कहीं भी हों हमारा मालिक हमें देख रहा है और अगर हम कोई गुनाह या पाप करेंगे तो वह हम से नाराज़ हो जाएगा।

अब क्योंकि मालिक को हर एक के कैरेकटर (चरित्र) के बारे में मालूम था कि इन में कौन अच्छा है और कौन बुरा। इनमें कुछ ऐसे अच्छे इनसान भी हैं कि वह अपना पूरा जीवन दूसरों की सेवा में बिता सकते हैं और इन में कुछ ऐसे निर्दयी लौग भी हैं जो लाखों मासूम इनसानों की हत्या कर सकते हैं। इस लिए अच्छों

और बुरों को एक जगह रखना अन्याय होगा। इसका मतलब तो यह हुआ के अच्छाई और बुराई में कोई अंतर ही नहीं है अच्छा आदमी और बुरा आदमी दोनों बराबर है। इस लिए मालिक ने यह चाहा कि इन मैं से अच्छे लोगों को अलग करूं और उनहें सवर्ग में भेजूं ओर बुरे लोगों को अलग करुं और उनहें नर्क मे भेजूं। लेकिन मालिक यह काम न्याय के साथ करना चाहता था। क्योंकि अगर वह इसी हालत में बुरे लोगों को नर्क में भेज देता तो वह यह सवाल करते कि मालिक ने हमें नर्क में क्यों डाल दिया हम ने कौन सा पाप किया है, क्योंकि अभी तक तो उनहोंने कोई पाप किया ही नहीं था।

इस लिए मालिक ने वही तरकीब अपनाई जो हम अपने बच्चे य नोकर के साथ अपनाते हैं कि उसको छुप कर देखते हैं कि मेरे सामने तो बहुत भोला बना रहता है लेकिन मेरे पीछे क्या करता है। बिलकुल यही तरकीब मालिक ने अपनाई कि उस ने हमें "आत्माओं की दुनिया" से निकाल कर इस धरती पर भेज दिया और अपने आप को हमारी नज़रों से छुपा लिया। इसी के साथ ही हमें सारी पिछली बातें भी भुला दीं के हम कहां रहते थे और हमारा बनाने वाला कौन है क्योंकि अगर हमें पिछली बातें याद रहतीं तब भी हम भोले बने रहते और कोइ पाप नहीं करते और इस तरह बुरे लोगों को अलग नहीं किया जा सकता था इस लिए मालिक ने हम से हर वह चीज़ छुपा ली या भुला दी जिस से हमें मालिक या उसकी क़ुदरत के बारे में ज़रा भी पता चल सके जैसे कि खुद अल्लाह, मरने के बाद का जीवन, सवर्ग, नर्क, फ़रिशते, जिन्नात वगैरा क्योंकि अगर हमें ज़रा सी भी भनक इन चीजों की लग जाती तो बुरे लोग भी सब नेक बन जाते ओर कोई पाप न करते। कयों कि मालिक यह देखना चाहता है कि हम बगैर किसी के दबाव य डर के पूरी आज़ादी के साथ अपनी इक्षा से अच्छे कर्म करते हैं या बुरे।

धरती पर आने के बाद क्या हुआ

इस धरती पर आने के बाद अब स्थिति बदल गई क्योंकि हर इनसान को यह दिखने लगा कि हमें कोई नहीं देख रहा अब जो जी चाहे करो बस जीवन का यही सब से बड़ा धोका है और यही सब से बड़ी परीक्षा (इम्तिहान) है। और इस तरकीब से बुरे लोगों की पहचान हो जाती है।

अब जो लोग बुरे चरित्र के थे वह खुल कर पाप करने लगे क्योंकि उन्हें लगा कि हमें कोई नहीं देख रहा और हम जो काम भी छुप कर करेंगे उसकी किसी को ख़बर नहीं होगी। जब अच्छे लोग उनसे कहते के भाई पाप मत करो तो वह कहते कि हमारा जो जी चाहेगा हम करेंगे तुम कौन होते हो रोकने वाले ज्यादा आदर्शवादी मत बनो, हमें कौन पकड़ेगा। तो अचछे लोग कहते कि भाई ऐसा तो हो नहीं सकता के हमारा बनाने वाला कोई न हो और हमारे किए का फल हमें न मिले तो बुरे लोग कहते दिखाऔ हमारा बनाने वाला कहां है तो अचछे लोग चुप हो जाते क्योंकि बनाने वाले को तो उनहोंने भी नहीं देखा।

अब परिस्थिति यह बन गई के अच्छे लोग कमज़ोर पढ़ गए और बुरे लोग शक्तिशाली हो गए क्योंकि अच्छे लोग हर काम से पहले यह देखते हैं कि यह काम अच्छा है या बुरा अगर अच्छा होता है तो करते हैं ओर बुरा होता है तो छोढ़ देते हैं कि अगर हम बुरा काम करेंगे तो मालिक नाराज़ हो जाएगा। लेकिन बुरे लोग बस अपना फ़ायदा देखते हैं अगर अच्छे काम में फ़ायदा लगता है तो अच्छा काम करते हैं और अगर बुरे काम मैं फ़ायदा लगता है तो बुरा काम करते हैं इसी वजह से उनके लिए सारे विकलप खुले होते हैं। बुरे लोग बे धढ़क झूट बोलते हैं धोका देते हैं पब्लिक को बेवकूफ़ बनाते हैं और अच्छे लोगों पर झूटे इलजांम लगाते हैं और अच्छे लोग झूट और धोके में उनका मुक़ाबला नहीं कर पाते।

बुरे लोगों की ज़यादा तर जीत क्यों होती है

अब सवाल यह पैदा होता है कि बुरे लोगों की ज़यादा तर जीत क्यों होती है इसकी मिसाल ऐसी है कि एक कमरे में दो आदमी लड़ रहे हैं और उस कमरे में एक छुपा हुआ कैमरा लगा है और बाहर एक पुलिस अधिकारी उन दोनों को लड़ते हुए स्क्रीन पर देख रहा है। लेकिन उन मैं से एक आदमी को तो मालूम है कि यहां कैमरा लगा है जबकि दूसरे आदमी को नहीं मालूम कि यहां कैमरा लगा है। तो जिस आदमी को पता

है के यहां कैमरा लगा है वह संभल संभल कर चलेगा वह दूसरे आदमी को मारेगा नहीं, गाली नहीं देगा, झूट नहीं बोलेगा बल्कि वह थोड़ा बहुत पिट भी जायगा तो जवाब नहीं देगा क्योंकि उसे मालूम है कि मैं जो कुछ कर रहा हूं उसे पुलिस अधिकारी बाहर से देख रहा है और बाद में वह हर हर चीज़ का हिसाब लेगा। जबकि जो आदमी यह समझ रहा है के यहां कोई कैमरा नहीं लगा वह बिलकुल नहीं डरेगा वह दूसरे आदमी को मारेगा, गालियां देगा, झूट बोलेगा और हर बुरा काम निडर हो कर करेगा। अच्छा आदमी यह सोच कर पिट लेगा के कोई बात नहीं यहां पर थोड़ा पिटना बाद में पुलिस की मार खाने और सालों जेल में काटने से अच्छा है। और उसे यह भी यक़ीन होगा के की पुलिस अधिकारी मुझे दगां न करने का इनाम देगा और इस आदमी को दंगा करने कि सज़ा मैं पीटेगा और जेल भेजेगा।

इस तरह दुनया में बुरे लोगों की ज़यादा तर जीत होती है क्योंकि उनके लिए सारे विकलप खुले होते हैं। इस लिए कुछ अच्छे लोग भी बुरे लोगों से जा मिलते हैं क्योंकि वह यह देखते हैं कि बुरे लोगों की ज़्यादा तर जीत होती है इस लिए बुरे लोगों का साथ देने मैं ही फ़ायदा है। इस तरह अच्छे लोग और ज़्यादा कमज़ोर पड़ जाते हैं। लेकिन यह सब मालिक अपने बन्दों की परीक्षा लेने के लिए करता है। इसी तरह से मालिक हर ज़माने में लोगों की परीक्षा (इम्तिहान) लेता है और ज़्यादा तर लोग धोका खा जाते हैं। इसी को मालिक क़ुरान में कहता है "दुनया का जीवन तो धोके का सामान है"। (क़ुरान 3:185)

हमें क्या करना है

मेरे प्यारे भाई जैसा कि ऊपर कहा गया के मालिक हम सब को छुप कर देख रहा है तो यह बात याद रखनी चाहिए के मालिक हर इनसान में दो चीजें देखता है

1. पहली चीज़ तो वह यह देखता है कि इस बन्दे का मेरे बारे में क्या विचार है। आया यह मेरी ही पूजा करता है या किसी मूर्ति की पूजा करता है, मेरे आगे माथा टेकता है या किसी मूर्ति के आगे माथा टेकता है। जब इस पर कोई दुख आता है तो मेरे आगे गिड़गिड़ाता है यी किसी पीर फ़कीर देवी देवता के आगे गिड़गिड़ाता ओर उस से मदद मांगता है। अगर इसे कोई खुशी पहुंचती है तो मुझे धन्यवाद कहता है या किसी मूर्ति पर माला चढ़ाता है। इस लिए हमें अल्लाह (ईशवर) के अलावा किसी की पूजा नहीं करनी है। ना ही किसी और के आगे माथा टेकना है। उस ने अपने पवित्र क़ुरान में अपना परिचय खुद कराया है। वह कहता है, और तुमहारा रब एक ही रब है जिस के सिवा कोई पूजा के लायक़ नहीं। वह बहुत महरबान (किर्पावान) और दयालू है (क़ुरान 02:163), कह दो कि अल्लाह एक है। अल्लाह किसी पर निर्भर नहीं है। न उसने किसी को जना न उसको किसी ने जना (यानी न उसके कोई माता पिता हैं न बच्चे)। ओर कोई भी किसी चीज़ में उसके बराबर नहीं है। (क़ुरान 112:1-4), और अपने परवरदिगार से अपनी क्षमा की दुआ माँगों फिर उसी की बारगाह में तौबा करो बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा मोहब्बत वाला मेहरबान है (क़ुरान 11:90), बस तुम मेरी याद रखो तो मै भी तुम्हारा ज़िक्र (खैर) किया करुगाँ और मेरा शुक्रिया अदा करते रहो और नाशुक्री न करो (क़ुरान 02:152), और जब तक तुम्हारे पास मौत न आए अपने परवरदिगार की इबादत में लगे रहो (क़ुरान 15:99)।

इसमें सोचने कि बात यह है कि हमें पैदा करने वाला अल्लाह है जिस ने हमें पैदा किया हमें इनसान बनाया वह चाहता तो हमें बकरा घोड़ा चीटीं कुछ भी बना सकता था लेकिन उसने हमें सब से अच्छा जीव यानि इनसान बनाया तो अगर वह हम से यह मुतालबा करता है की तुम केवल मेरी पूजा करो मेरे अलावा किसी और के आगे माथा मत टेको किसी देवी देवता मूर्ति मजार पीर के आगे माथा मत टेको तो इसमें कया ग़लत है। अगर मालिक हमारे सामने आजाए तो कया हम फिर भी उसे छोड़ कर किसी और की पूजा

करेंगे? नहीं ना। बस इसी तरह हमें बग़ैर देखे मालिक की पूजा करनी है कयोंकि वह हर जगह हमें देख रहा है।

कुछ लोग कहते हैं कि हम ईशवर को तो मानते हैं लेकिन देवी दतवता मूर्ति मजार पीर की पूजा इस लिए करते हैं ताकि वह मालिक से हमारी सिफ़ारिश कर दें। हालांकि ऐसा नहीं है कयोंकि मालिक ने कहीं भी नहीं कहा है कि मेरे साथ मेरे देवी दतवताओं की भी पूजा करो। दुनया में जितने महान लोग हुए हैं उनहों ने कभी भी मूर्तिपूजा नहीं की। अगर आदमी ईशवर के साथ किसी और की भी पूजा करता है तो उसे शिर्क करना कहते हैं और शिर्क की कोइ माफीं नहीं है। मालिक अपने पवित्र कुरान में कहता है कि "अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को क्षमा नहीं करेगा, और इस के अलावा जिसे चाहेगा क्षमा कर दे गा, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करे उस ने अल्लाह पर भारी आरोप गढ़ा।" (सूरतुन-निसा: 48) "और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए।" (सूरतुल बक़रा : 165)

2. दूसरी चीज़ मालिक हर बन्दे में यह देखता है कि यह बन्दा अपनी मरज़ी से अच्छे कर्म करता है या बुरे। इस लिए हमें अच्छे कर्म करने हैं और बुरे कर्मों से बचना है। मालिक कहता है, उसी (अल्लाह) ने मौत और जीवन को पैदा किया ताके तुमहारी परीक्षा ले कि कौन अच्छे कर्म करता है। (क़ुरान 67:02) लेकिन एसा नहीं है कि अगर हम से कोई पाप हो जाए तो वह मालिक क्षमा नहीं करेगा बलकि वह मालिक कहता है, कह दो ए मेरे बनदों जिनहों ने बहुत पाप किए हैं अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हों। अल्लाह सब पाप क्षमा करदेगा। बे शक वह क्षमा करने वाला और रहम करने वाला है। (क़ुरान 39:53) (लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि हम जान जान कर बार बार पाप करते रहें कि मालिक तो क्षमा करदेगा)।

तो मेरे प्यारे भाई मालिक ने यह छोटी छोटी दो शर्तें लगाई हैं (कि एक अल्लाह की पूजा करो और केवल अच्छे कर्म करो) सवर्ग में जाने के लिए कि यह दोनों शर्तें पूरी करके आ जाओ में तुम से खुश हो जाऊंगा और सवर्ग में भेज दूगां। इस तरह हम इस इम्तिहान में पास हो जाएंगे। बस यही हमें हमेशा याद रखना है और इसी हिसाब से पूरा जीवन गुज़ारना है। इसी बात को समझाने के लिए मालिक ने हर ज़माने में अपने ईशदूतों को भेजा। याद रहे हमारे ज़माने के ईशदूत मौहम्मद साहब हैं इस लिए हमें उनके लाए हुए संदेश क़ुरान को मानना है।

मुहम्मद साहब के ने अपनी तरफ़ से कोई नया संदेश नहीं सुनाया बल्कि मुहम्मद साहब तो आख़री ईशदूत हैं और पहले ईशदूत आदम अलैहिस्सलाम थे जो पहले इनसान भी थे। आदम अलैहिस्सलाम और मुहम्मद साहब के बीच तक़रीबन 124,000 ईशदूत आए अलग अलग समय पर और अलग अलग स्थानों में, लेकिन सब ईशदूतों ने एक ही संदेश सुनाया कि **"केवल एक अल्लाह की पूजा करो, अच्छे कर्म करो बुरे कर्मों से बचो ओर अपने ज़माने के ईशदूत के तरीक़े पर जीवन गुज़ारो**"। धरती पर आने वाले पहले इनसान से लेकर आख़री इनसान तक के लिए यही नियम है यह कभी नहीं बदलेगा।

इस जीवन के बाद

इस जीवन के बाद जब यह दुनया ख़तम हो जाएगी तो अल्लाह सारे इनसानों को एक जगह जमा करेगा और हर इनसान का हिसाब लेगा। हर इनसान के कर्म तोले जाएंगे। तराज़ू के एक पलड़े में अच्छे कर्म रखे जाएंगे और दूसरे पलड़े में बुरे कर्म रखे जाएंगे अगर अच्छे कर्म भारी हो जाएंगे तो सवर्ग में प्रवेश मिल जाएगा और अगर बुरे कर्म भारी हो जाएंगे तो आदमी को नर्क में डाल दिया जाएगा। अब फ़ायदा यह होगा कि बुरे लोग यह शिकायत नहीं कर सकते कि हमें नर्क में क्यों डाला जा रहा है हम ने क्या पाप किया है।

उस न्याय के दिन को क़यामत का दिन कहा जाता है उस दिन अन्याय नहीं होगा क्योंकि मालिक खुद न्याय करेगा, वहां धांधली और रिशवत नहीं चलेगी।

सवर्ग का टिकट कैसे मिलेगा

अब सवाल यह पैदा होता है कि सवर्ग में एडमिशन लेने के लिए सब से पहले क्या करना है। तो मेरे प्यारे भाई इसके लिए सब से पहले सवर्ग का श्लोक पढ़ना होगा। हर ईशदूत ने एक श्लोक बताया कि अगर आदमी जीवन में ऐक बार भी इस श्लोक को अपने मालिक के सामने पढ़ ले तो मालिक उसको अपने सच्चे बनदों मे गिन्ने लगता हे क्योंकि यह श्लोक पढ़ना उस मालिक के सामने इक़रार करना है की ए मालिक में तेरे सच्चे बनदों मे शामिल होना चाहता हूं। यह श्लोक पढ़ने के बाद मालिक उसका नाम नर्क वालों की लिस्ट में से काट कर सवर्ग वालों की लिस्ट में लिख देता है। जैसे किसी किसी जहाज़ मे सवार होने के लिए पहले टिकट लेना पढ़ता है इसी तरह मालिक की सवर्ग में प्रवेश लेने के लिए यह श्लोक पढ़ना पढ़ता है। और मरने के बाद सब से पहला सवाल इसी श्लोक के बारे में होता है। और जब आदमी पहली बार इस श्लोक को पढ़ता है तो मालिक उस बन्दे के सारे पिछले पाप क्षमा कर देता है और वह ऐसा पाक साफ़ हो जाता है जैसे कि वह आज ही मां के पेट से पैदा हुआ हो और अब से ही उसके कर्म लिखने शुरू किए जाते हैं। और जिस दिन आदमी पहली बार यह श्लोक पढ़ता है तो मालिक इतना ख़ुश होता है जैसे किसी मां का बच्चा खो जाए और कई दिन बाद मिले तो वह मां खुश होती है और उस बच्चे को अपने सीने से चिमटा लेती है इसी तरह मालिक खुश होता है कि आज मेरा प्यारा बन्दा नर्क की आग से बच गया कयों कि वह अपने बनदों पर बहुत महरबान है और उनसे बे पनाह मोहब्बत करने वाला है। लेकिन मेरे प्यारे भाई अगर यह श्लोक जीवन में एह बार भी नहीं पढ़ा और मालिक के अलावा किसी और की पूजा की या किसी और के आगे माथा टेका या किसी और से मदद मांगी तो मालिक कभी भी माफ़ नहीं करेगा और हमेशा हमेशा के लिए नर्क में डाल देगा चाहे किसी ईशदूत का बाप या भाई ही क्यों न हो, क्योंकि मालिक अन्याय नहीं करता। तो मेरे प्यारे भाई वह श्लोक यह है पढ़ें **{ला इलाहा इलल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह। अर्थः नहीं है कोई पूजा के लायक़ सिवाय आल्लाह के, और मुहम्मद साहब अल्लाह के रसूल (ईशदूत) हैं}**। अगर आप ने एक दफ़ा भी यह कलमा कह लिया तो आप हमेशा हमेशा की नरक से बच जाएंगे और जन्नत में जा सकेंगे।

मेरे प्यारे भाई अब जैसा कि ऊपर बताया गया कि यह श्लोक एसा है जैसे सवर्ग का टिकट मिल गया लेकिन जब हम किसी जहाज़ या बस का टिकट लेते हैं तो उसको जहाज़ या बस से उतरने तक संभाल कर रखना पढ़ता है इसी तरह हम ने यह श्लोक पढ़ कर जन्नत का टिकट तो ले लिया लेकिन इसकी मरते दम तक रक्षा करनी है। रक्षा करने का तरीक़ा यह है कि इसको बार बार दोहराते रहना है रोज़ाना इसको कम से कम दस बार दोहराना है और मरते सम्य तक दोहराते रहना है। क्योंकि अंत पर ही फ़ैसला किया जाता है जैसे कि कहावत है “अंत भला तो सब भला”। तो मेरे प्यारे भाई मरने से पहले जिसका आखरी शब्द यह श्लोक होगा तो सिरफ़ वह इनसान ही सवर्ग में जा पाएगा। अगर यह श्लोक पूरा याद न रहे तो केवल “अल्लाह” भी कह सकते हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि मालिक की पूजा किस तरह करनी है तो मालिक की पूजा ऐसे करनी है जैसे हम उसे देख रहे हैं और मालिक ने अपनी पूजा का तरीक़ा खुद बताया है उसे कहते हैं नमाज़, यानी नमाज़ पढ़नी है वैसे तो पांच वक़्त कि नमाज़ फ़रज़ है लेकिन अभी शुरुआत में जब मौक़ा मिल जाए पढ़ लें और धीरे धीरे बढ़ाते जायें। और थोड़ा क़ुरान पढ़ लिया करें, आप किसी भी दुकान से हिन्दी का क़ुरान खरीद सकते हैं। क़ुरान मालिक का आख़री संदेश है अपने तमाम बनदों के नाम, इस लिए कम से कम हम उसे पढ़ कर तो देखें कि मालिक हम से कया कहना चाहता है। और आज से मुर्ति पूजा बिलकुल छोड़ दें कयोंकि जो लोग अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करते हैं य किसी और के आगे माथा टेकते हैं मालिक उनहें कभी क्षमा निहीं करेगा और उनको हमेशा हमेशा के लिए नर्क में डाल

देगा। और अगर अभी कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम मालिक का नाम लेना यानी “अल्लाह अल्लाह” कहना तो शुरू कर ही दें कम से कम मालिक की जन्नत में एडमिशन तो मिल जाए। मेरे प्यारे भाई इसका मोक़ा केवल मौत से पहले पहले है ओर मौत कभी भी आ सकती है इसलिए आज से ही उस मालिक का नाम लेना शुरू करदें। हो सकता है आप इसलाम पर चलना चाह रहे हों लेकिन समाज का डर हो कि अगर किसी को पता चल गया तो कया होगा तो कम से कम अकेले में अल्लाह का नाम तो ले सकते हैं। मालिक हमारे दिल के हाल को जानता है कि मेरा बंदा मेरा बनना तो चाहता हे लेकिन समाज के डर से पूरे इसलाम पर नहीं चल पा रहा है लेकीन कम से कम मेरा नाम तो ले रहा है, ‘अल्लाह अल्लाह’ तो कह रहा है तो हो सकता है अल्लाह पूरे इसलाम पर चलने वालों में हमारा शुमार कर ले ओर जन्नत में भेज दे। लेकिन बग़ैर अल्लाह का नाम लिए हम जन्नत में नहीं जा सकते कम से कम ‘अल्लाह अल्लाह’ तो कहना ही पड़ेगा। वरना अगर मरने के बाद मालिक ने हम से यह पूछ लिया कि तुम दुनया में जा कर मुझे बिलकुल भूल गए कि तुम ने मेरा नाम तक निहीं लिया। जैसे जैसे हम अल्लाह का नाम लेते जाएंगे अल्लाह की मोहब्बत हमारे दिल में बढ़ती जाएगी ओर हम अल्लाह से क़रीब होते जाएंगे। और दुनया का सब से कामयाब आदमी वह है जिस से उसका बनाने वाला अल्लाह राज़ी हो जाए।

अब सवाल यह पैदा होता है कि जन्नत कैसी है, तो मेरे मेरे प्यारे भाई जन्नत में ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह देगा जिनको न किसी आँख ने देखा होगा और न किसी कान ने सुना होगा और न किसी आदमी को कभी उनका ख़याल गुज़रा होगा। एक हदीस में है जन्नतियों से कहा जाएगा “हे जन्नत के वासियों, तुम्हारे लिए खुशखबरी है कि तुम हमेशा स्वस्थ रहोगे कभी बीमार न होगे, तुम हमेशा जीवित रहोगे कभी मौत न आएगी, तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, तुम हमेशा नेमतों में रहोगे कभी वंचित न होगे।”(सही मुस्लिम: 2837)

जब कि जो लोग अल्लाह को भूल कर जीवन गुज़ार रहे हैं अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करते हैं और पाप करते हैं वह दोज़ख़ (नर्क) में डाले जाएंगे जहां वह हमेशा सज़ा पाएंगे। वहां आग होगी, सांप बिच्छू होंगे जो उनको डसेंगे और फ़रिशते उनकी हतौड़ों से पिटाई करेंगे और वहां मौत भी नहीं आएगी। मालिक कहता है, और जो लोग अपने परवरदिगार के मुनकिर (अपने पैदा करने वाले के अलावा किसी और की पूजा करने वाले) हैं उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब है और वह (बहुत) बुरा ठिकाना है। जब ये (बुरे) लोग (नर्क में) डाले जाएँगे तो उसकी बड़ी चीख़ सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी। बल्कि गोया जोश के मारे फट पड़ेगी। जब उसमें (उनका) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उनसे जहन्नुम का दारोग़ा पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं आया था (कि एक अल्लाह की पूजा करो अच्छे कर्म करो और बुरे कर्मों से बचो)। वह कहेंगे हाँ हमारे पास डराने वाला तो ज़रूर आया था मगर हमने उसको झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने तो तुम पर कुछ नाज़िल ही नहीं किया, तुम तो बड़ी गुमराही में (पड़े) हो। और (बुरे लोग जब नर्क में डाल दिए जाएंगे तो) कहेंगे कि अगर हम (पैग़म्बर की बात) सुनते और समझते तो (आज) दोज़ख़ियों में न होते। (क़ुरान 67:6-10)

तो मेरे मेरे प्यारे भाई जन्नत में जाने के लिए और दोज़ख़ से बचने के लीए एक बार फिर से श्लोक दोहरा लें,

{ला इलाहा इलल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह। अर्थः नहीं है कोई पूजा के लायक़ सिवाय आल्लाह के, और मुहम्मद साहब अल्लाह के रसूल (ईशदूत) हैं}।

---

[1] موسسہ الکتب الثقافیہ، بیروت لبنان ,pp.135-137 بستان الواعظین وریاض السامعین، امام ابن الجوزی

[2] रोज़ुर रयाहीन